शान्ति एवं विकास

— ब्रह्माकुमारी शीलू, पाण्डव भवन, आबू पर्वत

अमेरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी ने कहा था – यह एक दुर्भाग्य की बात है कि हम युद्ध की तैयारी से ही शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे विश्व युद्ध के बाद संसार के लिए 'विश्व शान्ति' एक बहुत बड़ी चिन्ता का विषय बन गयी है क्योंकि अभी तक भी शीत युद्ध, जातीय युद्ध और शस्त्रों की होड़ का सिलसिला जारी है। हमें इस बात की खुशी जरूर है कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद इस धरती ने फिर भी कुछ शान्ति का अनुभव किया है। विकसित और विकासशील देशों के एजेण्डा में वैश्विकरण और आर्थिक प्रगति ऊँचें स्थान पर हैं। तकनीकी स्तर पर भी विश्व को आगे बढ़ता देख बहुत अच्छा लगता है। विश्व में शान्ति तो बनी हुई है और हर बात सामान्य भी दिखाई पड़ती है। लेकिन इस 'सामान्य' शब्द के भीतर बहुत सारे अर्थ छिपे हुये हैं। जैसे कि कहावत है – ''चश्मा होने से आँखों की नज़र सामान्य हो जाती है''।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद विश्व में चल रहे संघर्षों को रोकने और शान्ति एवं विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गयी। लेकिन पिछले छः दशकों में एक भी ऐसा वर्ष नहीं बीता होगा कि जब विश्व में छोटे-मोटे युद्ध नहीं हुये हों। यह एक कटु सत्य है कि आज भी इस सृष्टि पर 40 से अधिक देशों में कहीं-न-कहीं युद्ध हो रहे हैं और कुछ युद्ध तो कईं वर्षों से चले आ रहे हैं। आज धर्म के नाम पर भी कितने युद्ध हो रहे हैं। अतः शान्ति बनाये रखना एक बहुत मुश्किल कार्य हो गया है। हालाँकि आज यू.एन. कई देशों में शान्ति बनाये रखने के लिए शान्ति सेना तैनात करता जा रहा है। फिर भी शान्ति रूपी चीड़िया जैसे कोसों दूर भाग गयी है। किसी ने कहा है कि शान्ति इतिहास में वह मजेदार क्षण है जिसमें सभी अपने आपको शस्त्रों से लैस करने में लगे हुये हैं। हँसी की बात तो यह है कि शान्ति के लिए हथियारों की होड़ चल रही है। अधिकांश विकसित देश अपने क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने के लिए आण्विक अस्त्रों-शस्त्रों को और भी एकत्रित करते जा रहे हैं। शस्त्र बनाने वाले देश अपनी आवश्यकता से अधिक शस्त्रों का निर्माण कर छोटे-छोटे देशों को बेचते रहते हैं ताकि वे देश अपने पड़ोसी दुश्मन देश से लड़ सकें। उसके बाद वे ही देश और आधुनिक हथियार उन दोनों दुश्मन देशों को बेचते हैं और दोनों से मुनाफ़ा कमाते रहते हैं। इससे कई देशों के बीच में कईं सालों तक युद्ध चलते रहते हैं। सच्चाई यह है कि शान्ति की बजाये विश्व में हथियारों की खतरनाक होड़ चल रही है जिससे आज मौत का बाज़ार गर्म हो रहा है। उस पर फिर आतंकवाद का साया इस होड़ को और भी गहराता जा रहा है। अनेकानेक निर्दोष लोगों की हत्यायें इस तरह से हो रही है कि लगता है कि मौत बिल्कुल सस्ती हो गयी है।

युद्ध हो या न हो परन्तु आज शान्ति एक महँगा कारोबार सिद्ध हुआ है। इस टुकड़े-टुकड़े हुये संसार में शान्ति बनाये रखने के लिए कितना समय, शक्ति, धन, संसाधन और मनुष्यों की बलि चढ़ रही है। बन्दूकों के साये में हम किस प्रकार की शान्ति का आनन्द ले रहे हैं, यह भी एक विचारणीय विषय है। ATM यानी Any Time Money की तरह आज ATW अर्थात् Any Time War भी वास्तविकता बन गयी है। आज हमें हर बात के लिए सुरक्षा सैनिक रखने पड़ रहे हैं। घर के बाहर, दफ्तर के बाहर, कारखानों के बाहर, रेल्वे स्टेशन, एयरपोर्ट यहाँ तक कि बसों एवं ट्रेनों में भी सुरक्षा की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। कहीं भी, कभी भी कुछ भी हो सकता है। व्यक्ति का व्यक्ति से विश्वास उठता जा रहा है। ऐसी स्थिति के कारण हर देश को अपने बजट में सुरक्षा पर अत्याधिक धन लगाना पड़ रहा है। परिणामस्वरूप जो धन विकास अर्थात् स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी सुविधाओं, शोध, आर्थिक प्रगति, कृषि आदि पर लगाना चाहिये वह आज सुरक्षा पर लगाया जा रहा है। इसीलिये जो विकास हम चाहते हैं वह नहीं हो पा रहा है।

वर्तमान समय विश्व जिस शान्ति का अनुभव कर रहा है वह तूफ़ान से पूर्व छा जाने वाले सन्नाटे की तरह का अनुभव है। बाह्य भौतिक प्रगति के चकाचौंध में हमारी आँखें इतनी धुँधली होती जा रही हैं कि हम यह भी भूलते जा रहे हैं कि इस शान्ति को बनाये रखने के लिए हमें कितना खर्चा करना पड़ेगा और उसके बाद भी वह शान्ति कब तक बनी रहेगी? इस धरा पर कभी वह भी समय था कि जब लोगों को अपने घरों में ताले लगाने की भी आवश्यकता नहीं होती थी। इतना आपसी विश्वास हुआ करता था। परन्तु आज के हालतों को देखकर एक गीत याद आ रहा है – ''देख तेरे संसार की हालत क्या हो गयी भगवान, कितना बदल

गया इंसान''। तो अब समय आ चुका है कि हम अपने आपसे पूछें कि शान्ति प्राप्त करने के लिए हमें और कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी? और क्या इसके लिए सचमुच इतनी कीमत देने की आवश्यकता है? इसका जवाब हमें ढूँढ़ना होगा।

कहा गया है कि युद्धस्थल पर युद्ध शुरू होने से पहले वह मन में शुरू होता है। इसी प्रकार शान्ति भी विश्व में आने से पहले मन में आती है। जिस प्रकार बूँद-बूँद से सागर बनता है इसी प्रकार व्यक्तिगत शान्ति से ही विश्व में शान्ति आयेगी। व्यक्ति में शान्ति आने से परिवार में शान्ति आयेगी, परिवार में आने से समाज में आयेगी, समाज में आने से देश में आयेगी और देश में शान्ति आने से पूरे विश्व में शान्ति स्थापित हो जायेगी। अब आवश्यकता इस बात की है कि सबसे पहले व्यक्तिगत शान्ति का अनुभव किया जाये। मन में शान्ति पाने के लिए हमें अपने अन्दर प्रेम, विश्वास, सहिष्णुता, सत्यता, सम्मान, सहयोग, नम्रता आदि मूल्यों का विकास करना होगा। और इन मूल्यों के विकास के लिए जीवन में आध्यात्मिकता को स्थान देना होगा क्योंकि आध्यात्मिकता के अभाव से ही सारे मानवीय मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं जिससे यह संसार नर्क बनता जा रहा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, अलबेलापन, स्वार्थ, लालच, जलन, छल, कपट, निंदा, चुगली, बेईमानी, हेराफेरी, बदले की भावना आदि-आदि अनेकानेक विकृतियों की विषमताओं के जाल में मनुष्य फँसता जा रहा है परिणाम स्वरूप वह जीवन में दुःख और अशान्ति का ही अनुभव करता रहता है। यदि हम जीवन में शान्ति चाहते हैं तो आध्यात्मिकता को जीवन में स्थान देना ही होगा। यही एक ऐसी कड़ी है जिसका अभाव ही सभी समस्याओं का कारण है। आध्यात्मिकता क्या है हमें इसे समझना होगा।

आध्यात्मिकता धर्म से महान है। आध्यात्मिकता अर्थात् आत्मा का अध्ययन। यानी यह समझना कि – हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? क्यों आये हैं? जीवन का लक्ष्य क्या है? हमें क्या करना है? और कहाँ जाना है? आदि-आदि। आध्यात्मिक ज्ञान कहता है कि शान्ति तो आप आत्मा का स्वधर्म है। शान्ति तो आपके भीतर ही निवास करती है। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि जो शान्ति हमारे भीतर है हम उसे बाहर ढूँढ़ रहे हैं। शान्ति तो हमारी सोच में है। अगर हम शान्ति का चिन्तन करेंगे तो हम शान्ति का ही अनुभव करेंगे। अगर अशान्ति का चिन्तन करेंगे तो अशान्ति का अनुभव करेंगे। इसीलिये किसी ने ठीक ही कहा है – आप वही हैं जो आप सोचते हैं और आप जो सोचते हैं वही आप बन जाते हैं। तो शान्ति हमसे कितनी दूर है? वास्तव में शान्ति तो केवल हमारे एक सोच की दूरी पर है, वह हमारे गले का हार है। 'ओमशान्ति' वह महामन्त्र है जो हमें शान्ति की अनुभूति कराता है। हम इस देह से भिन्न एक अज़र-अमर-अविनाशी चैतन्य शक्ति आत्मा हैं जो कभी न जलती, न गलती, न सूखती है। यह आत्म-निश्चय ही हमें आत्म-बोध करायेगा। और हम अपने जीवन में तो शान्ति का अनुभव करेंगे ही करेंगे साथ-ही-साथ दूसरों को भी शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। इसी से जीवन में भी विकास होगा। हम व्यसनों से मुक्त हो सकेंगे। क्योंकि आत्म अनुभूति से आत्म विश्वास बढ़ेगा और हमें स्वयं का सच्चा बोध होगा। जीवन की पहेली का हल मिल जायेगा। जीवन संघर्ष की बजाये एक वरदान बन जायेगा, प्रभु-प्रसाद बन जायेगा। इससे हमारा व्यक्तिगत विकास तो होगा ही साथ-साथ परिवार, समाज, देश और विश्व का भी विकास होगा। मानव देवतुल्य बन जायेगा और यह संसार नर्क से बदल स्वर्ग बन जायेगा। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ चलिये, हम कुछ घड़ियों के लिए शान्ति की गहन अनुभूति करते हैं। ओम् शान्ति ।